CCI NG 3.7 Product: NBTLucknowBS PubDate: 11-01-2026 Zone: Lucknow Edition: 1 Page: NBTLPG10 User: cci Time: 01-10-2026 22:54 Color:

Gen-Z की रहस्यमयी दुनिया डिकोड

जंग, क्रांति, Nothing Ever Happens

2026 की शुरुआत ट्रंप की वेनेज़ुएला पर स्ट्राइक से हुई। जहां दुनिया का एक बड़ा हिस्सा इसे वर्ल्ड वॉर-3 की शुरुआत मान रहा था, वहीं इंटरनेट पर Nothing Ever Happens मीम्स की बाढ़ आ गई। इस फिलॉसफी को मानने वालों को लगता है कि जंग हो या किसी देश में क्रांति या तख्तापलट या फिर कोरोना जैसी महामारी का आना, आखिर में कुछ नहीं बदलता। इसी से जुड़ा है Billions Must Die का विचार और Chudjak कैरेक्टर। सोशल मीडिया पर स्क्रॉलिंग के दौरान हमें यह मीम कल्चर दिखता है, लेकिन समझ नहीं आता। आखिर Gen-Z के इस मीम कल्चर का असली मतलब क्या है और इसकी शुरुआत कैसे हुई? इस रोमांचक और रहस्यमयी दुनिया से पर्दा उठा रहे हैं वरुण आनंद

मीम नहीं, ख़ास नज़रिया

Nothing Ever Happens (NEH) का आसान शब्दों में मतलब है कि कभी कुछ नहीं होता, लेकिन असल में इसका मतलब कहीं गहरा है। डिजिटल युग में यह केवल इंटरनेट मुहावरा या मीम नहीं रह गया है बल्कि यह आज के दौर की राजनीति और वैश्विक घटनाओं को देखने का एक खास नज़रिया बन गया है। इसे मानने वालों खासकर Gen-Z का कहना है कि दुनिया आज ऐसे दौर में पहुंच चुकी है, जहां बड़ी से बड़ी घटना चाहे वह कितनी भी क्रांतिकारी या विनाशकारी क्यों न लगे, आखिर में मौजूदा हालात को बदलने में नाकाम ही रहती है। सब कुछ वही रहता है।

It's Happening के जवाब में हुई शुरुआत

Nothing Ever Happens की शुरुआत It's Happening के जवाब में हुई। यह सोच किसी भी घटनाक्रम को बड़े बदलाव से जोड़ती है। इसकी शुरुआत 21वीं सदी के पहले दशक में पूर्व अमेरिकी पॉलिटिशिन और डॉक्टर रॉन पॉल से मानी जाती है। वह इंटरनेट पर इतने ज्यादा लोकप्रिय हुए कि मीम्स में उनकी फोटो के साथ It's Happaening लिखकर फैलाया गया यानी अगर रॉन पॉल राष्ट्रपति बने तो अमेरिका में बहुत बड़ा बदलाव होगा, लेकिन भारी ऑनलाइन सपोर्ट के बावजूद उन्हें उनकी पार्टी ने उम्मीदवार ही नहीं बनाया। मतलब उम्मीद तो बहुत थी, पर नतीजा कुछ नहीं निकला। इसी It's Happening की ओवरहाइप के जवाब में तंज करते हुए Nothing Ever Happens की शुरुआत हुई।

Nothing Burger इतिहास इंटरनेट से भी पुराना

इस सोच की जड़ें इंटरनेट से भी पहले की हैं। अंग्रेजी मुहावरे Nothing Burger का मतलब है कोई ऐसी चीज़ या घटना जिसे बहुत ज्यादा प्रचारित किया गया, लेकिन असल में वह बेकार या उम्मीद से बहुत कम निकली यानी खोदा पहाड़, निकला चूहा। Nothing Burger का इस्तेमाल 1950 के दशक में हॉलिवुड गॉसिप कॉलमिस्ट लौएला पार्सन्स ने किया, जिसका मकसद ऐसी अफवाहों को खारिज करना था, जिनमें कोई दम नहीं होता था। फिर यह वाशिंगटन डी.सी. के राजनीतिक हलकों में पॉपुलर हुआ, जहां इसका यूज़ उन विवादों या जांचों के लिए हुआ जो बड़े लेवल पर शुरू हुईं, पर आखिर में कोई ठोस रिजल्ट नहीं निकला।

ये हैं प्लैटफॉर्म

कहा जाता है कि इस सोच का आधुनिक और डिजिटल अवतार इंटरनेट पर सबसे पहले गुमनाम इंटरनेट फोरम 4chan पर आया। समय के साथ 4chan के यूज़र्स ने महसूस किया कि It's Happening के कई दावे फेल हुए। तब It's Happening कहने वालों का मजाक उड़ाने और उन पर तंज कसने के लिए Nothing Ever Happens (NEH) की शुरुआत हुई। इसके बाद यह Reddit और X (पहले ट्विटर) पर फैलते चले गए और आज भी जब हम किसी सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म को स्क्रॉल करते हैं तो एक अजीब से एक्सप्रेशन में सफेद चेहरे वाला कैरेक्टर हमारे सामने आ जाता है।

आज भी जारी है जंग

आज भी दुनिया में जब कोई बड़ी घटना होती है तो सोशल मीडिया पर उसके रिएक्शन आने लगते हैं। एक वर्ग कहता है कि कुछ हो रहा है, कुछ बड़ा होने वाला है, कोई बड़ा बदलाव होगा, जबकि इसका जवाब Nothing Ever Happens (NEH) मानने वाले अपनी बातों से देते हैं। इंटरनेट पर दोनों विचारधाराओं की जंग आज भी हर मुद्दे पर देखने को मिलती है।

...यानी यह सोच काफी हद तक सही

अभी तक हम दुनिया में ऐसी कई बातें और घटनाएं सुन और देख चुके हैं, जिनसे लग रहा था कि इनके बाद तो बहुत बड़ा बदलाव आ जाएगा, लेकिन आखिर में वही ढाक के तीन पात। कुछ नहीं बदला।

ऐतिहासिक घटना	It's Happening का दावा	NEH के मुताबिक कुछ नहीं बदला
Y2K बग (2000)	दुनियाभर के कंप्यूटर सिस्टम साल 2000 में खराब हो जाएंगे।	आखिर में यह बात सिर्फ अफवाह साबित हुई, कुछ भी नहीं निकला।
रॉन पॉल अभियान (2012)	अमेरिकी राजनीति में क्रांतिकारी बदलाव आएगा, देश पर होगा असर।	रॉन को उनकी पार्टी ने ही टिकट नहीं दिया और कुछ नहीं बदला।
दुनिया का अंत (21 दिसंबर 2012)	माया कैलेंडर के मुताबिक दुनिया खत्म हो जाएगी, प्रलय होगी।	न कोई प्रलय आई, न दुनिया खत्म हुई। यह तो आज भी वैसी की वैसी है।
कोविड-19 (2020)	यह महामारी दुनिया की तस्वीर पूरी तरह से बदल कर रख देगी।	कुछ समय बाद हम वापस अपने-अपने पुराने रुटीन पर लौट आए।
साउथ कोरिया मार्शल लॉ (2024)	देश बड़े संघर्ष की ओर बढ़ता दिखा, कई इलाकों में सेना तैनात की गई।	कुछ ही घंटों में बिना किसी बड़े बदलाव के चीज़ें सामान्य हो गईं।

नोट: हालांकि, इन घटनाओं का सामना कर चुके लोगों का तर्क हो सकता है कि बदलाव आया है। कोरोना में अपनों को खोने वाले कह सकते हैं कि सब कुछ पहले जैसा नहीं रहा, लेकिन देखा जाए तो हर कोई आज अपनी ज़िंदगी वैसे ही जी रहा है जैसे कोविड से पहले जी रहा था। भले ही किसी अपने को खो दिया हो।

छिपी क्रांति की तरह: NEH की सोच वालों की निराशा को एक छिपी क्रांति के रूप में भी देखा जा सकता है, जो हर बार किसी बदलाव की बातें सुन-सुन कर इतने ऊब चुके हैं कि बदलाव की उम्मीद ही छोड़ चुके हैं। इससे उनके अंदर धधक रही है बड़े बदलाव की आग जिसे Billions Must Die के रूप में देख सकते हैं।

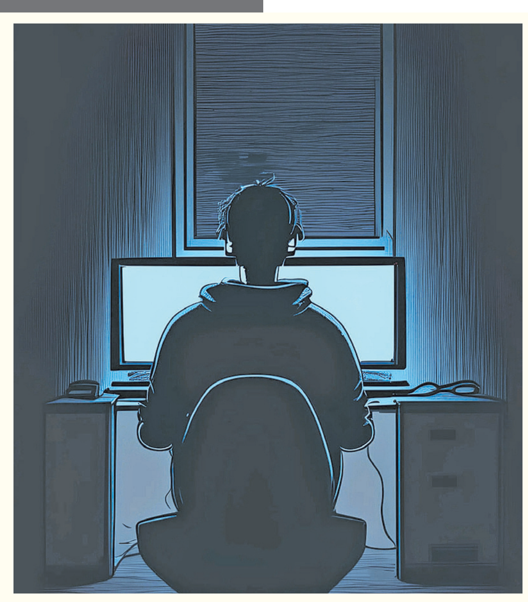

यह तो सदियों से सुन रहे

कभी कुछ नहीं बदलता और बड़े विनाश के बिना बदलाव नहीं आ सकता, ये विचार नए नहीं बल्कि हम सदियों से सुन रहे हैं।

मूल स्थिति तो वही रहती है

ज्यादातर दर्शन भी यही कहते हैं कि संसार चक्र में घूमता रहता है, जहां घटनाएं घटती तो हैं, लेकिन मूल स्थिति वही रहती है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है यानी बाहरी बदलाव के बावजूद मूल सत्य स्थिर रहता है। इसे आइंस्टाइन के ऊर्जा के सिद्धांत से भी जोड़ सकते हैं, जिसके मुताबिक ऊर्जा कभी नष्ट नहीं होती, बस अपना रूप बदलती है।

प्रलय की बात हर धर्म में है

लगभग हर धर्म और सभ्यता में प्रलय या संसार के अंत की अवधारणा मिलती है। हालांकि, उसके रूप और कारण अलग-अलग बताए गए हैं। सनातन धर्म में प्रलय को सृष्टि के चक्र का हिस्सा माना गया है, जहां सृष्टि, स्थिति और संहार बार-बार होते हैं। ईसाई और इस्लाम धर्म में प्रलय को एक अंतिम दिन (Judgement Day/क़यामत) के रूप में देखा गया है। यही तो Gen-Z कहना चाहते हैं Billions Must Die.

...ताकि नया समाज बने

Billions Must Die को सीधे शब्दों में लिखें तो इसका मतलब होता है 'अरबों को मरना होगा', लेकिन इसका भाव अरबों लोगों के मरने से नहीं बल्कि बड़े विनाश की ज़रूरत से है। Gen-Z जो कि बदलाव की बातों से पक चुके हैं, उनका साफ कहना है कि आज सामाजिक और राजनीतिक सिस्टम इतना खराब हो चुका है कि इसे सुधारना नामुमकिन है। इसलिए इसके विनाश की प्रक्रिया को तेज़ कर देना चाहिए, ताकि एक नया समाज जन्म ले सके। नया समाज पुराने समाज के खत्म होने से ही बन सकता है।

The West has fallen से जुड़ा

इस विचारधारा का जन्म भी गुमनाम इंटरनेट फोरम 4chan पर हुआ था। यह इंटरनेट का ऐसा कोना है जहां अक्सर बहुत ही तीखी पॉलिटिकल चर्चाएं और विवादित मीम्स बनते हैं। इसकी शुरुआत और प्रसार को इस तरह से देखा जा सकता है।

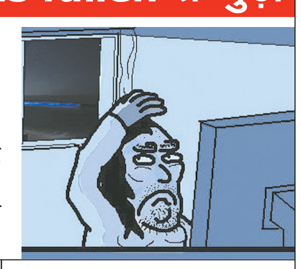

2019 में मिला चेहरा

इस मीम का मुख्य चेहरा Chudjak है। कहा जाता है कि यह कार्टून फेस 2019 में अमेरिका के एल पासो में हुई गोलीबारी की घटना को अंजाम देने वाले पैट्रिक क्रूसियस पर आधारित था।

2021 में जुड़ा

2021 के आसपास, 4chan पर यूज़र्स ने पश्चिमी समाज के कथित पतन का मजाक उड़ाने के लिए The West has fallen (पश्चिम का पतन हो चुका है) कहना शुरू किया। इसके साथ ही Billions Must Die का नारा जुड़ गया।

ध्यान खींचने के लिए ऐसे शब्दों का इस्तेमाल

Billions Must Die को पहली नज़र में देखें तो एकदम से लगता है कि अरबों लोगों की मौत! दरअसल, ऐसे शब्दों को इस्तेमाल करने के पीछे का मकसद ही लोगों का ध्यान खींचना है।

दिखती है ग्लोबल रीसेट की भावना

इस सोच को मानने वाले निराशा के उस चरम पर पहुंच चुके हैं, जिनका मानना है कि इस दुनिया का अब कुछ नहीं हो सकता। आज की दुनिया, सरकारों और सिस्टम को इतना जंग लग चुका है कि ग्लोबल रीसेट किए बिना सुधार या बदलाव मुमकिन ही नहीं है। यह क्रांति की वह दबी चिंगारी है जो ऐसी सोच वालों के अंदर ही अंदर धधक रही है।

उम्मीद लाते हैं Billions Must Try जैसे विचार

कहते हैं रोशनी से पहले का अंधेरा सबसे घना होता है यानी हर अंधेरे के बाद रोशनी आती ही आती है। इसी तरह निराशा की एक्सट्रीम भावना Billions Must Die के जवाब में Billions Must Try, Billions Must Love/Smile, Billions Must Heal, Billions Must Hope/Live जैसे पॉजिटिव और उम्मीद भरे विचारों के मीम्स आते हैं। Billions Must Try का विचार कहता है कि भले ही कामयाब होने की गारंटी न हो, लेकिन अरबों लोगों को कोशिश ज़रूर करनी चाहिए क्योंकि कोशिश करना ही इंसान की ताकत को दिखाता है और कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। Billions Must Love/Smile में अक्सर Chudjack को गुस्से के बजाय एक बड़ी मुस्कान के साथ दिखाया जाता है। Billions Must Hope/Live का विचार कहता है कि दुनिया अभी खत्म नहीं हुई है और अरबों लोगों को जीने की उम्मीद बनाए रखनी चाहिए। वहीं, The West Has Risen तो The West Has Fallen का सीधा जवाब है, जो यह बताता है कि सभ्यता का पतन नहीं हुआ है बल्कि वह नए सिरे से ऊपर उठ रही है।

कब से इंटरनेट पर

कहा जाता है कि Nothing Ever Happens की शुरुआत 2014 में 4chan पर हुई और करीब 2019 में Billions Must Die का विचार दुनिया में सोशल मीडिया पर फैला। हालांकि, भारत में 2020 के बाद ये विचार बदले हुए मीम्स के साथ फैलने शुरू हुए और अब हर जगह दिखाई देते हैं।

दोनों विचार आपस में जुड़े

Nothing Ever Happens और Billions Must Die दोनों ही एक-दूसरे को पूरा करते हैं। ये फिलॉसफी आज के डिजिटल युग के खालीपन, हताशा और दुनिया की बड़ी घटनाओं के प्रति अलग नजरिया पेश करती हैं। जहां Nothing Ever Happens बोरियत और स्थिरता की बात करता है, वहीं Billions Must Die उस स्थिरता को खत्म करने की इच्छा है।

...और भी हैं विचारधाराएं

Nothing Ever Happens और Billions Must Die के अलावा ऐसी तमाम फिलॉसफी हैं, जो इंटरनेट पर अपनी भावनाएं दिखाने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं। इनमें से कुछ खास ये हैं:

We Live in a Society
यह उन नियमों और सामाजिक हालात पर तंज कसने के लिए इस्तेमाल किया जाता है जो बहुत अजीब या बेतुके लगते हैं। जब कोई बहुत ज्यादा गंभीर बनकर दुनिया को कोसता है तो लोग मज़ाक में कहते हैं कि भाई रहने दे, पता है कि हम एक समाज में रहते हैं।

This Is Fine
जब चारों तरफ आग लगी हो यानी मुसीबतें हों तब कोई शांति से बैठकर कॉफी पीते हुए कहे कि सब ठीक है। यह हार मानने की भावना को दिखाता है। अक्सर एग्जाम्स प्रेशर, वर्क लोड या बड़ी मुसीबतों में मजबूरी दिखाने के लिए इसे यूज़ किया जाता है।

Touch Grass
इसका मतलब है कि फोन, कंप्यूटर छोड़ो और बाहर जाकर असली दुनिया को देखो। जब कोई इंटरनेट पर किसी बात को लेकर बहुत ज्यादा गुस्सा हो जाए या बेतुकी बहस करने लगे तो लोग उसे रियलिटी चेक देने के लिए कहते हैं कि गो, टच ग्रास।

Clown World
दुनिया को एक पागलखाने या सर्कस की तरह देखना जहां कुछ भी लॉजिकल नहीं हो रहा। बस तमाशा चल रहा है। जब खबरें या सरकारी फैसले बहुत ही अजीब और बेतुके लगते हैं तो लोग कहते हैं कि Welcome to the clown world.

Let It Rot
जब हालात इतने खराब हों कि उन्हें सुधारना नामुमकिन लगे तो कोशिश करना छोड़ देना और उसे ज्यादा खराब होने देना। यह चीन के युवाओं से शुरू हुआ एक विचार (Bai Lan) है। इसका मतलब है कि इसे सड़ने दो।

Dead Internet Theory
करीब 2021 में पॉपुलर हुई इस सोच के मुताबिक, इंटरनेट अब इंसानों का नहीं रहा। बॉट्स (bots) और AI से जनरेटेड कॉन्टेंट से भरा है। लोग इससे अपने अकेलेपन की भावना दिखाते हैं, जहां उन्हें लगता है कि वे इंसानों के बजाय मशीनों से बात कर रहे हैं।

वे कैरेक्टर जो बनाते हैं डिजिटल थिएटर: चेहरे जो बिन बोले कह जाते हैं सब कुछ

Nothing Ever Happens और Billions Must Die की सोच को दिखाने के लिए एक खास चेहरे का इस्तेमाल किया जाता है। कहा जाता है कि यह Chudjak है जो अपने चेहरे के एक्सप्रेशन से ही कई बार ऐसी बातें कह जाता है जो शब्द बयां नहीं कर पाते। इंटरनेट पर यह एकदम से नहीं आ गया। जिस तरह से ऊपर बताए दोनों विचार किसी न किसी से प्रेरित हुए, किसी का जवाब देने के लिए जन्मे और डिवेलप होते चले गए, उसी तरह से Chudjak भी पुराने मीम का विकसित हुआ रूप माना जाता है।

जानें, इन मीम्स की विकास यात्रा

2009 का वोयाक है पूर्वज

इन मीम्स को समझने के लिए इनके चेहरे के पूर्वज वोयाक (Wojak) को समझना ज़रूरी है। कहा जाता है कि वोयाक की शुरुआत 2009 में एक पोलिश इमेजबोर्ड विचान (Vichan) पर हुई थी। शुरुआत में यह केवल एक उदास चेहरे का स्केच था जो सहानुभूति और दुख को दिखाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। समय के साथ वोयाक के कई वेरिएंट बने। विचान 4chan की तरह था और कहा जाता है कि उससे प्रेरित था, लेकिन अब यह पूरी तरह से बंद हो चुका है।

उदास चेहरे के स्केच से शुरुआत

सहानुभूति और दुख को दिखाया गया

वोयाक के चर्चित वेरिएंट और उनके मतलब

Soyjak (2017)
यह चश्मे और दाढ़ी वाला वोयाक है जो अक्सर किसी चीज़ पर उत्साहित होता है। इसकी आंखों में चमक दिखती है। यह कमज़ोर समझे जाने वालों का मज़ाक उड़ाने के लिए इस्तेमाल होता है।

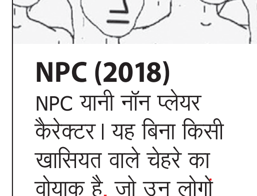

NPC (2018)
NPC यानी नॉन प्लेयर कैरेक्टर। यह बिना किसी खासियत वाले चेहरे का वोयाक है, जो उन लोगों को दिखाता है जो खुद नहीं सोचते और केवल भेड़चाल में चलते दिखते हैं।

Doomer (2018)
काली कैप पहनकर सिगरेट पीता हुआ वोयाक, जो निराशा, डिप्रेशन और दुनिया के अंत पर भरोसा दिखाता है। इसके मुताबिक भविष्य अंधेरे में है और सिस्टम नहीं बदलेगा और मेहनत का फल नहीं मिलेगा।

Bloomer (2018)
यह डूमर के उलट है जो पॉज़िटिव है। इसे Hopecore भी कहते हैं। इसमें लोग इस बात पर ज़ोर देते हैं कि भले ही दुनिया में कितनी भी मुश्किलें हों, जीने की खुशी और उम्मीदें नहीं छोड़नी चाहिए।

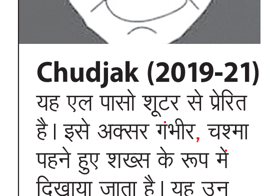

Chudjak (2019-21)
यह एल पासो शूटर से प्रेरित है। इसे अक्सर गंभीर, चश्मा पहने हुए शख्स के रूप में दिखाया जाता है। यह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो एक्सट्रीम विचारधाराओं की ओर झुकाव रखते हैं।

Disclaimer: आमतौर पर मीम्स को सिर्फ हंसी-मज़ाक की चीज़ समझा जाता है, लेकिन इसमें कई तरह की भावनाएं शामिल हैं। मीम्स इमोशंस को दुनिया के सामने रखने का तरीका हैं, न कि उसका विश्लेषण। ये हमारी रोजमर्रा की थकान, गुस्से और बेबसी को भी दुनिया के सामने रखते हैं। लेकिन याद रखें कि ये किसी घटना की साइंटिफिक रिपोर्ट या फैक्ट-बेस्ड एनालिसिस नहीं हैं। मीम्स एक 'इमोशनल ब्रिज' की तरह काम करते हैं, जो हमें अहसास दिलाते हैं कि अपनी परेशानियों में हम अकेले नहीं हैं। हमारे जैसे दूसरे लोग भी हैं। वैसे मीम्स बातों को बहुत ज्यादा बढ़ा-चढ़ाकर दिखाते हैं। इनका काम कुछ ही सेकंड में फीलिंग्स को दूसरों तक पहुंचाना होता है। ये भावनाओं को 'शॉर्टकट' में समझाने का तरीका हैं, इसलिए इनमें पूरी सचाई या हर पहलू की जानकारी नहीं होती।

आर.एन.आई. नं. UPHIN/2019/78296 © सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कंपनी लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक रितेश माथुर, टाइम्स हाउस, 16/79G, सिविल लाइंस, कानपुर-208001 से प्रकाशित तथा बैनेट, कोलमैन एंड कंपनी लिमिटेड, प्लॉट नं. 407, ग्राम-उत्तरधौना, पी.ओ. चिनहट, अयोध्या रोड, लखनऊ 226028 से मुद्रित। फोन : 0512-2380312, 0522-4154444, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई- 400001
स्थानीय संपादक : सुधीर मिश्र (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी. आर. बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी)।